जुमे का ख़ुत्बा

तारीख: 28 रबी-उल-अव्वल 1448 हिजरी, 11 सितंबर 2026 ईस्वी

تَرْبِيَةُ الْأَوْلَادِ

औलाद की तरबियत

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَن لَّا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ، وَصَفِيُّهُ مِنْ خَلْقِهِ وَخَلِيلُهُ، أَدَّى الأَمَانَةَ، وَبَلَّغَ الرِّسَالَةَ، وَجَاهَدَ فِي اللهِ حَقَّ جِهَادِهِ، حَتَّى أَتَاهُ اليَقِينُ، صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ وَسَلَّمَ تَسْلِيماً كَثِيرًا؛ {يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُسْلِمُونَ} [آل عمران: 102]

أَمَّا بَعْدُ: فَإِنَّ أَصْدَقَ الْحَدِيثِ كِتَابُ اللهِ، وَخَيْرَ الْهَدْيِ هَدْيُ مُحَمَّدٍ صلى الله عليه وسلم، وَشَرَّ الْأُمُورِ مُحْدَثَاتُهَا، وَكُلَّ مُحْدَثَةٍ بِدْعَةٌ، وَكُلَّ بِدْعَةٍ ضَلَالَةٌ، وَكُلَّ ضَلَالَةٍ فِي النَّارِ.

ऐ अल्लाह के बंदो! औलाद अल्लाह की बहुत बड़ी नेमत और रब्बानी तोहफ़ा है, जिसे वह अपने बंदों में जिसे चाहता है नवाज़ता है। अल्लाह तआला का इरशाद है:

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا وَجَعَلَ لَكُمْ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ بَنِينَ وَحَفَدَةً وَرَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ [سورة النحل: 72]

"और अल्लाह ने तुम्हारे लिए तुम ही में से जोड़े बनाए और तुम्हारे लिए तुम्हारी बीवियों से बेटे और पोते बनाए और तुम्हें पवित्र चीज़ों से रोज़ी दिया।" [सूरह अन्-नहल: 72]

औलाद दुनियावी जिंदगी की ख़ूबसूरती और उसकी रौनक़ है, सबसे क़ीमती और महुमूल्य तोहफ़ा है। उनके नेक और अच्छे होने से आँखें ठंडी होती हैं, दिल को सुकून मिलता है और आत्मा को शांति है। इसी लिए रहमान के बंदों की यह दुआ रही है:

رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّاتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا [سورة الفرقان: 74]

"ऐ हमारे रब! हमें हमारी बीवियों और हमारी औलाद से आँखों की ठंडक अता फ़रमा और हमें परहेज़गारों का इमाम बना।" [सूरह अल-फ़ुरक़ान: 74]

बंदे के लिए अल्लाह की सबसे बड़ी तौफ़ीक़ यह है कि उसकी नस्ल से ऐसा इंसान पैदा हो जो सिर्फ एक अल्लाह की इबादत करे, जिसका कोई शरीक नहीं। वह अपने बेटे को

अपनी आँखों के सामने नमाज़ पढ़ते और क़ुरआन की तिलावत करते देखता है, तो उसका दिल ख़ुशी और पर्ष व उल्लास से खिल उठता है। मक़सद यह कि औलाद की अच्छी परवरिश और सही तरबियत एक बहुत ही क़ीमती मक़सद है और अल्लाह तआला की तरफ़ से एक बहुत बड़ी तौफ़ीक़ है।

ऐ ईमान वालो! आज के दौर की कठिन चुनौतियों को देखते हुए औलाद की परवरिश एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी और बेहद अहम फ़र्ज है। सही और अच्छी परवरिश के लिए सब्र, समझदारी, गंभीरता और गहरी सूझ-बूझ की जरूरत होती है। आज के दौर में बच्चों की परवरिश वैसी नहीं रही जैसी पहले हुआ करती थी; क्योंकि अब तरीके बदल चुके हैं, असर डालने वाले जरिया बहुत ज्यादा हो चुके हैं और चुनौतियाँ और बढ़ गई हैं। आज का बच्चा एक ऐसी खुली दुनिया में जी रहा है जहाँ वह माता-पिता या शिक्षक की बातों के मुकाबले में इन नए जरियों से कहीं ज्यादा सुनता, देखता और असर लेता है। यही वजह है कि आज बच्चों की परवरिश प्रतिदिन कोशिश और लगातार सब्र की मांग करती है। अल्लाह तआला ने कहा:

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا أَنْفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ [سورة التَّحْرِيم: 6]

"ऐ ईमान वालो! अपने आप को और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिसका ईंधन इंसान और पत्थर होंगे।" [सूरह अत्-तहरीम: 6]

हाफिज इब्ने कसीर रहिमहुल्लाह फरमाते हैं: "यानी उन्हें भलाई का हुक्म दो, बुराई से रोको, और उन्हें लावारिस या बेसहारा न छोड़ो कि क़ियामत के दिन उन्हें आग आ घेरे।"

ऐ खुशकिस्मत लोगो! चुनौतियों के इस दौर में औलाद की परवरिश में सबसे ज्यादा मददगार चीज़ों में से एक यह है कि उनके दिलों में बचपन ही से ईमान बैठा दिया जाए। क्योंकि जब दिल ईमान से भर जाता है तो आमाल खुद ब खुद सही हो जाते हैं, अख़लाक़ सँवर जाते हैं, और बच्चा खुद अपने अंदर अल्लाह की निगरानी का एहसास

पैदा करता है। फिर वह सीधे रास्ते पर क़ायम रहता है भले ही परवरिश करने वाले (माता-पिता या शिक्षक) मौजूद न हों।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है, उन्होंने कहा: एक दिन मैं अल्लाह के रसूल ﷺ के पीछे सवार था, तो आपने फ़रमाया:

يَا غُلَامُ، إِنِّي أُعَلِّمُكَ كَلِمَاتٍ، احْفَظِ اللَّهَ يَحْفَظْكَ، احْفَظِ اللَّهَ تَجِدْهُ تُجَاهَكَ، إِذَا سَأَلْتَ فَاسْأَلِ اللَّهَ، وَإِذَا اسْتَعَنْتَ فَاسْتَعِنْ بِاللَّهِ، وَاعْلَمْ أَنَّ الْأُمَّةَ لَوِ اجْتَمَعَتْ عَلَى أَنْ يَنْفَعُوكَ بِشَيْءٍ لَمْ يَنْفَعُوكَ إِلَّا بِشَيْءٍ قَدْ كَتَبَهُ اللَّهُ لَكَ، وَلَوِ اجْتَمَعُوا عَلَى أَنْ يَضُرُّوكَ بِشَيْءٍ لَمْ يَضُرُّوكَ إِلَّا بِشَيْءٍ قَدْ كَتَبَهُ اللَّهُ عَلَيْكَ، رُفِعَتِ الْأَقْلَامُ وَجَفَّتِ الصُّحُفُ

"ऐ लड़के! मैं तुम्हें कुछ अहम बातें सिखाता हूँ: तुम अल्लाह के हुक्मों की हिफ़ाज़त करो, वह तुम्हारी हिफ़ाज़त करेगा। तुम अल्लाह के हक़ों का ख़याल रखो, तुम उसे अपने सामने पाओगे। जब भी तुम कुछ माँगो तो सिर्फ़ अल्लाह से माँगो, और जब मदद चाहो तो सिर्फ़ अल्लाह से मदद माँगो। और यह बात जान लो कि अगर दुनिया के सब लोग मिलकर तुम्हें कोई फ़ायदा पहुँचाना चाहें, तो वे तुम्हें उससे ज़्यादा कोई फ़ायदा नहीं पहुँचा सकते जो अल्लाह ने तुम्हारे भाग्य में लिख दिया है। और अगर वे सब मिलकर तुम्हें कोई नुक़सान पहुँचाना चाहें, तो उससे ज़्यादा कोई नुक़सान नहीं पहुँचा सकते जो अल्लाह ने तुम्हारे नसीब में लिख दिया है। क़लम उठा लिए गए हैं और (तक़दीर के) पन्ने सूख चुके हैं।" [इस हदीस को इमाम तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है और इसे सही क़रार दिया है]

ऐ ईमान वाले भाइयो! बेटों और बेटियों की सही परवरिश का एक बेहतरीन तरीक़ा यह है कि उन्हें छोटी उम्र ही से अल्लाह के आदेशों का पालन करने और उसकी मना की गई चीज़ों से दूर रहने की आदत डाली जाए। अल्लाह तआला ने कहा:

وَأْمُرْ أَهْلَكَ بِالصَّلَاةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا لَا نَسْأَلُكَ رِزْقًا نَحْنُ نَرْزُقُكَ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوَى (سورة طه: 132)

"अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म दीजिए और ख़ुद भी उस पर डटे रहिए। हम आपसे रोज़ी नहीं माँगते, हम ही आपको रोज़ी देते हैं; और अच्छा अंजाम परहेज़गारी (तक़वा) का ही है।" [सूरह ताहा: 132]

और अल्लाह तआला ने अपने नेक बंदे लुक़मान की वह बात बयान करते हुए फ़रमाया, जब वे अपने बेटे को नसीहत कर रहे थे:

يَابُنَيَّ أَقِمِ الصَّلَاةَ وَأْمُرْ بِالْمَعْرُوفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ عَلَى مَا أَصَابَكَ إِنَّ ذَلِكَ مِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ (سورة لقمان:17)

" ऐ मेरे प्यारे बेटे! नमाज़ क़ायम करो, भलाई का हुक्म दो, बुराई से रोको और जो भी मुसीबत तुम पर आए उस पर सब्र करो; यक़ीनन यह बड़ी हिम्मत के कामों में से है।" [सूरह लुक़मान: 17]

और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

مُرُوا أَوْلَادَكُمْ بِالصَّلَاةِ وَهُمْ أَبْنَاءُ سَبْعِ سِنِينَ، وَاضْرِبُوهُمْ عَلَيْهَا وَهُمْ أَبْنَاءُ عَشْرٍ، وَفَرِّقُوا بَيْنَهُمْ فِي الْمَضَاجِعِ [رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَصَحَّحَهُ]

"अपनी औलाद को सात साल की उम्र में नमाज़ का हुक्म दो, और दस साल की उम्र में नमाज़ न पढ़ने पर उन्हें मारो, और उनके सोने के बिस्तर अलग कर दो।" [इस हदीस को इमाम अबू दाऊद और इमाम तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है और इमाम तर्मिज़ी ने इसे सही कहा है]

बल्कि नबी करीम ﷺ छोटे बच्चों का ख़ास ख़याल रखते थे और उनका हाल-चाल पूछते थे। बच्चों के साथ आपका तरीक़ा देखभाल, नरमी और मुहब्बत से भरा था। आप बच्चों से उनकी नमाज़ के बारे में पूछते थे ताकि उन्हें इसकी अहमियत का एहसास हो, वे इसके आदी बनें और अल्लाह के साथ उनका रिश्ता मज़बूत हो सके।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं: "मैं अपनी ख़ाला मैमूनह के घर रात में रुका, तो नबी करीम ﷺ इशा के बाद आए और पूछा:

«أَصَلَّى الْغُلَامُ؟»

क्या लड़के ने नमाज़ पढ़ ली है? आप से कहा गया: जी हाँ। [इस हदीस को इमाम अबू दाऊद ने रिवायत किया है और अल्लामा अल्बानी ने इसे सही क़रार दिया है]

नबी करीम ﷺ की तरबियत सिर्फ़ बाहरी इबादतों तक ही सीमित नहीं थी, बल्कि खाने-पीने और रोज़मर्रा के तौर-तरीक़ों की बारीक बातों तक फैली हुई थी। हज़रत उमर बिन अबी सलमा रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है, उन्होंने कहा: मैं अल्लाह के रसूल ﷺ की परवरिश में एक छोटा लड़का था, और मेरा हाथ खाने के बर्तन में इधर-उधर घूमता था। तो अल्लाह के रसूल ﷺ ने मुझसे कहा:

«يَا غُلَامُ، سَمِّ اللَّهَ، وَكُلْ بِيَمِينِكَ، وَكُلْ مِمَّا يَلِيكَ»

"ऐ लड़के! बिस्मिल्लाह कहो, अपने दाहिने हाथ से खाओ, और जो तुम्हारे सामने है उसमें से खाओ।" फ़रमाते हैं: "इसके बाद हमेशा मेरा खाने का यही तरीक़ा रहा।" [इस हदीस को इमाम बुख़ारी इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है]

ऐ मुसलमानो! आज के दौर में बच्चों की परवरिश को बिगाड़ने वाला सबसे ख़तरनाक जुमला यह कहना है कि: 'इसे छोड़ दो, यह अभी छोटा है।' यह एक ऐसा जुमला है जो ग़लतियों पर परदा डालता है, अच्छी नसीहतों के चिराग़ बुझा देता है और लापरवाही के दरवाज़े खोल देता है। इसका नतीजा यह निकलता है कि बेटा जो चाहे करे उसे रोका नहीं जाता, और बेटी जो चाहे पहने उस पर टोका नहीं जाता। यहाँ तक कि यह नस्ल ग़लत माहौल में पलती है, लापरवाही की आदी हो जाती है और किसी की बात की परवाह नहीं करती। याद रखिए! बचपन में जिस पौधे की अच्छी देखभाल की जाए, जवानी में वही हरा-भरा और फलदार पेड़ बनता है।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है, उन्होंने कहा: हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने सदक़े की खजूरों में से एक खजूर उठाई और उसे अपने मुँह में डाल लिया। तो नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया:

«كِخْ كِخْ» «أَمَا شَعَرْتَ أَنَّا لَا نَأْكُلُ الصَّدَقَةَ» [رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ].

"छिः छिः, इसे थूक दो, क्या तुम्हें नहीं मालूम कि हम सदक़ा नहीं खाते?।" [इस हदीस को इमाम बुख़ारी ने रिवायत किया है]

अल्लामा इब्नुल क़य्यिम रहिमहुल्लाह फ़रमाते हैं: "जो इंसान अपने बच्चे को फ़ायदेमंद बातें सिखाने में लापरवाही बरतता है और उसे आवारा छोड़ देता है, उसने उसके साथ बहुत बड़ी ज़ियादती की है। ज़्यादातर बच्चों की ख़राबी उनके माँ-बाप की लापरवाही और उन्हें दीन के फर्ज़ और सुन्नतें न सिखाने की वजह से पैदा होती है; चुनाँचे माँ-बाप ने बचपन ही में उन्हें बर्बाद कर दिया, तो न वे ख़ुद अपने किसी काम के रहे और न बड़े होकर अपने माँ-बाप के लिए फ़ायदेमंद साबित हुए।"

هِيَ الْأَخْلَاقُ تَنْبُتُ كَالنَّبَاتِ...إِذَا سُقِيَتْ بِمَاءِ الْمَكْرُمَاتِ
تَقُومُ إِذَا تَعَهَّدَهَا الْمُرَبِّي ...عَلَى سَاقِ الْفَضِيلَةِ مُثْمِرَاتِ

अख़्लाक़ और अच्छी आदतें पौधे की तरह पनपती और बढ़ती हैं... अगर उन्हें इज़्ज़त, भलाई और बुज़ुर्गी के पानी से सींचा जाए। और जब परवरिश करने वाला (माता-पिता या शिक्षक) उनकी सही देखभाल करता है, तो वे अच्छाई और फ़ज़ीलत के तने पर खड़े होकर बेहतरीन फल देने लगते हैं (यानी अच्छा इंसान समाज में बा-इज़्ज़त और फ़ायदेमंद बन जाता है।

بَارَكَ اللهُ لِي وَلَكُمْ فِي الْقُرْآنِ الْعَظِيمِ، وَنَفَعَنِي وَإِيَّاكُمْ بِمَا فِيهِ مِنَ الآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيمِ، أَقُولُ قَوْلِي هَذَا وَأَسْتَغْفِرُ اللهَ لِي وَلَكُمْ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ، فَاسْتَغْفِرُوهُ وَتُوبُوا إِلَيْهِ؛ إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ.

दूसरा ख़ुत्बा

الْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى إِحْسَانِهِ، وَالشُّكْرُ لَهُ عَلَى تَوْفِيقِهِ وَامْتِنَانِهِ، وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى الدَّاعِي إِلَى رِضْوَانِهِ، مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ، وَمَنْ سَارَ عَلَى مِنْوَالِهِ إِلَى يَوْمِ الدِّينِ.

ऐ अल्लाह के बंदो! अल्लाह से डरो जैसा कि उससे डरने का हक़ है, और तन्हाई और महफ़िल में उसकी निगरानी का एहसास रखो, और जान लो कि तुम उसी की तरफ़ जमा किए जाओगे।

ऐ मुसलमानो! औलाद की सही परवरिश का सबसे बेहतरीन जरिया 'अमली नमूना' (खुद रोल मॉडल) बनना है। यह एक ऐसी ख़ामोश सीख है जो बिना कुछ कहे बच्चों के दिलों पर असर करती है; क्योंकि बच्चा अपने सामने अच्छे अख़लाक़ और बेहतरीन

मिसाल देखकर खुद-ब-खुद असर लेता है। बच्चों के बिगड़ने की सबसे ख़तरनाक वजह यह है कि वे माँ-बाप या बड़ों की कथनी और करनी में फ़र्क़ देखें। यही वजह है कि अल्लाह तआला ने अपने प्यारे नबी ﷺ को भी हुक्म दिया कि वे अपने से पहले गुज़रे हुए तमाम अम्बिया-ए-किराम की पैरवी करें। अल्लाह ने कहा:

أُولَئِكَ الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ فَبِهُدَاهُمُ اقْتَدِهْ (سورة الانعام:90)

"यही वे लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी है, सो आप भी उन्हीं की हिदायत की पैरवी करें।" [सूरह अल्-अनआम: 90]

इसी तरह अल्लाह तआला ने आपकी उम्मत को आप की तमाम बातों, कामों और हालतों में उनकी पैरवी करने की ताकीद की है। अल्लाह तआला ने कहा:

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِمَنْ كَانَ يَرْجُو اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ وَذَكَرَ اللَّهَ كَثِيرًا(سورة الأحزاب:21)

"यक़ीनन तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल के जीवन में बेहतरीन नमूना है, हर उस इंसान के लिए जो अल्लाह और आख़िरत के दिन की उम्मीद रखता है और अल्लाह को बहुत ज़्यादा याद करता है।" [सूरह अल्-अहज़ाब: 21]

यह इस बात का सबूत है कि बेहतरीन अमली मिसाल पेश करना एक सेहतमंद समाज के बनने का बुनियादी खंभा है, और ऐसे नेक लोगों को तैयार करने का अहम ज़रिया है जिनसे पूरा समाज फ़ायदा उठाता है।

ऐ ख़ुशक़िस्मत लोगो! जान लो कि परवरिश के बेहद असरदार तरीक़ों में से एक यह है कि हम बच्चों की दिलचस्पी पर गहरी नज़र रखें, उनके दिमाग़ में चलने वाली बातों को समझें और उनके साथ खुले दिल से बातचीत करें; यहाँ तक कि उनके और हमारे बीच की सारी दीवारें गिर जाएँ और वे बात करते वक़्त पूरी तरह महफ़ूज़ महसूस करें। इस तरह बाप या माँ एक दोस्त और साथी की शक्ल में उनके निगहबान बन जाते हैं, जो डर और गहरी महब्बत के साथ-साथ मार्गदर्शन और दया को एक साथ लेकर चलते हैं।

ज़रा इस ख़ूबसूरत बातचीत पर ग़ौर करें जो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और उनके बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के बीच हुई थी:

فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ يَابُنَيَّ إِنِّي أَرَى فِي الْمَنَامِ أَنِّي أَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرَى قَالَ يَاأَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ سَتَجِدُنِي إِنْ شَاءَ اللَّهُ مِنَ الصَّابِرِينَ (سورة الصافات:102)

"फिर जब वह उनके साथ भाग-दौड़ करने की उम्र को पहुँच गया तो (इब्राहीम ने) कहा: ऐ मेरे प्यारे बेटे! मैं ख़्वाब में देखता हूँ कि मैं तुझे ज़बह कर रहा हूँ, अब तुम देखो तुम्हारी क्या राय है? उसने कहा: ऐ मेरे अब्बा जान! वही कीजिए जिसका आपको हुक्म दिया जा रहा है, इंशा अल्लाह आप मुझे सब्र करने वालों में से पाएँगे।" [सूरह अस्-साफ़्फ़ात: 102]

और जब हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने ख़्वाब देखा तो उन्होंने अपना राज़ अपने बाप के सिवा किसी पर ज़ाहिर नहीं किया। क्योंकि राज़ तो उसी के सामने अमानत रखे जाते हैं जिसके पास दिल को इत्मीनान नसीब हो:

إِذْ قَالَ يُوسُفُ لِأَبِيهِ يَاأَبَتِ إِنِّي رَأَيْتُ أَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَأَيْتُهُمْ لِي سَاجِدِينَ (سورة يوسف:4)

"जब यूसुफ़ ने अपने पिता से कहा: ऐ मेरे अब्बा जान! मैंने (ख़्वाब में) ग्यारह सितारे और सूरज और चाँद देखे हैं, मैंने देखा है कि वे मुझे सजदा कर रहे हैं।" [सूरह यूसुफ़: 4]

لَيْسَ الْيَتِيمُ مَنْ انْتَهَى أَبَوَاهُ مِنْ   هَمِّ الْحَيَاةِ وَخَلَّفَاهُ ذَلِيلَا
إِنَّ الْيَتِيمَ هُوَ الَّذِي تَلْقَى لَهُ   أُمًّا تَخَلَّتْ أَوْ أَبًا مَشْغُولَا

"असल यतीम वह नहीं जिसके माँ-बाप दुनिया से चले जाएँ और उसे अकेला व बेसहारा छोड़ जाएँ, बल्कि हक़ीक़ी यतीम वह है जिसकी माँ उससे लापरवाही बरतने लगे या जिसे ऐसा व्यस्त पिता मिले जो उसे वक़्त न दे।"

اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِلْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ، الْأَحْيَاءِ مِنْهُمْ وَالْأَمْوَاتِ، رَبَّنَا ارْفَعْ عَنَّا الْبَلَاءَ وَالْوَبَاءَ، وَالضَّرَّاءَ وَالْبَأْسَاءَ، وَأَدِمْ عَلَيْنَا النِّعَمَ، وَادْفَعْ عَنَّا النِّقَمَ، وَزَكِّ نُفُوسَنَا أَنْتَ خَيْرُ مَنْ زَكَّاهَا، رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ، اللَّهُمَّ وَفِّقْ أَمِيرَنَا وَوَلِيَّ عَهْدِهِ لِمَا تُحِبُّ وَتَرْضَى، وَخُذْ بِنَوَاصِيهِمَا لِلْبِرِّ وَالتَّقْوَى، وَاجْعَلْ هَذَا الْبَلَدَ آمِنًا مُطْمَئِنًّا، سَخَاءً رَخَاءً وَسَائِرَ بِلَادِ الْمُسْلِمِينَ.

"ऐ अल्लाह! तमाम ज़िंदा और फ़ौत हो चुके मुसलमान मर्दों और औरतों को माफ़ फ़रमा। ऐ हमारे रब! हमसे हर क़िस्म की आफ़त, वबा, तकलीफ़ और सख़्ती को दूर

फ़रमा, हम पर अपनी नेमतें हमेशा क़ायम रख, हमसे अज़ाब और आज़माइशें हटा दे, और हमारे दिलों और नफ़्सों को पाक कर दे क्योंकि तू ही सबसे बेहतर पाक करने वाला है। ऐ हमारे रब! हमें दुनिया में भी भलाई दे और आख़िरत में भी भलाई प्रदान कर, और हमें जहन्नम के अज़ाब से बचा। ऐ अल्लाह! हमारे अमीर और वली-ए-अहद को उस काम की तौफ़ीक़ दे जिसे तू पसंद करता है और जिससे तू राज़ी होता है, और नेकी और तक़वा के रास्ते पर उनकी रहनुमाई फ़रमा। और हमारे इस मुल्क को और तमाम मुस्लिम मुल्कों को अमन व सुकून, फ़रावानी और सुख-शांति का केंद्र बना दे।"

ख़ुत्बात-ए-जुमा तैयार करने वाली कमेटी